स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में सामाजिक और राजनीतिक अभिव्यक्ति : एक अनुशीलन

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
लखनऊ से हिन्दी साहित्य विषय में
पीएच०डी० की उपाधि
हेतु प्रस्तुत

शोध-सारांशिका

BABASAHEB BHIMRAO AMBEDKAR UNIVERSITY
LUCKNOW
प्रज्ञा शील करूणा
ESTABLISHED 1996

शोधार्थी
देबीलाल
नामाकंन संख्याः 623/18

शोध निर्देशक
डॉ0 शिवशंकर यादव
सहायक आचार्य

हिन्दी विभाग
भाषा एवं साहित्य विद्यापीठ
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय) (NAAC : A+ + ACCREDITATION)
विद्या विहार, रायबरेली रोड
लखनऊ–226025 (उ0प्र0)

2024

शोध–सारांशिका

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता के समकालीन परिवेश में सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक वास्तविकताओं पर तथ्यपरक विचार किया गया है। कविताओं के माध्यम से समाज के बदलते मानवीय चेहरे को यथार्थ रूप में आर्थिक अभिव्यक्ति दी गयी है और आज के भूमंडलीकरण के दौर में मनुष्य की बदलती जरूरतें समाज में व्याप्त विसंगतियों को चित्रित कर सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक में फैले भ्रष्टाचार एवं बेरोजगारी जैसी सामाजिक समस्याओं के सवालों पर तथ्यपरक समीक्षा करते हुए हिन्दी साहित्य के मूल्यों की स्थापना करना हमारे शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य है।

स्वातंत्र्योत्तर कविता प्रगतिशील रुझानों के विभिन्न उपादानों के साथ विकसित मानवीय सौंदर्य की कविता है। यह प्रतिक्रियावादी कलावादियों और अकवितावादियों का निषेध करती रंगात्मक और वर्गहीन समाज की आस्थाशील कविता है। किसी भी विचारधारा की प्रतिक्रिया ना होना इसकी महत्वपूर्ण विशेषता है। हिंदी साहित्य के इस अद्‌भुत महत्वपूर्ण काव्यधारा की नींव महाप्राण 'निराला' पंत और केदारनाथ अग्रवाल ने डाली। इसको विकसित करने में जिन्होंने योगदान दिया उनमें शमशेर, नागार्जुन, मुक्तिबोध और अज्ञेय अग्रिम पंक्तियों में आते हैं। छायावादी कविता कल्पना की अनंत सागर में निमज्जित थी। हालांकि इन कवियों ने प्रच्छन्न रूप से राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों पर कलम अवश्य चलायी और तत्कालीन परिस्थितियों से सरोकार भी रखा परंतु ये विषम यथार्थ स्थितियों पर खुलकर सामने नहीं आ सके। अतः कुछ रचनाकारों ने छायावाद से विद्रोह प्रारंभ कर दिया और धरती के यथार्थ से जुड़ने लगे। इस तरह जिस नवीन शैली की कविता की रचना प्रारंभ हुई यथार्थवादी प्रगतिवादी शैली थी क्योंकि इसमें कल्पना से यथार्थ पर उतरने का सफल प्रयास किया गया था और यह सही मायनों में कविता की प्रगति थी। प्रगतिशील कविता धरती की गंध से जुड़ी, दलितों और दुखियों की कविता थी।

अज्ञेय ने 1943 में 'तार सप्तक' का प्रकाशन किया तथा 1947 में 'प्रतीक' पत्रिका का संपादन किया। उन्होंने कविता के संदर्भ में नये आयाम स्थापित किये। प्रयोगशील और नयी कविता का आरम्भ यहीं से होता है। इस काव्यधारा के प्रमुख कवियों में अज्ञेय, गिरिजा कुमार माथुर, रघुवीर सहाय, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, केदारनाथ सिंह, नरेश मेहता, धर्मवीर भारती, कुंवर नारायण, अशोक वाजपेयी, लक्ष्मीकांत वर्मा आदि शामिल हैं। स्वातंत्र्योत्तर कविता इन पडावों को पार करती आगे बढ़ी है। समसामयिक विभिन्न परिस्थितियों को आत्मसात् करती विकसित होती वर्तमान स्वरूप को प्राप्त कर सकी है। अतः यह संघर्षमयी कविता है। संस्कृति का ह्रास, संस्कारों का पतन, राजनैतिक विचारशून्यता,सारे संसार में शक्ति तथा अर्थ की दृष्टि से सर्वोपरि बनने की महत्वाकांक्षा, देश की जनता का तमाम तरह की परेशानियों से जूझना–खतरा, महंगाई, अराजकता, बेरोजगारी और आतंकवाद से त्रस्त होना इन्होंने कविता को प्रभावित किया है, संघर्ष के लिए मजबूर भी किया है।

स्वातंत्र्योत्तर कविता तत्कालीन परिवेश को उजागर करती है जिसमें राजनेताओं की व्यक्तिहीनता के प्रति आक्रोश भरा है। ये राजनीतिक चरित्र की दृष्टि से गिरे हुए पथभ्रष्ट भी हैं, इन्होंने देश को विकास की बजाय विनाश के पथ पर डाल रखा है। इन्होंने व्यवस्था को आम आदमी के लिए क्रूर, संवेदनहीन और पहुंच से बाहर कर दिया है। इसीलिए यह कविता अपने में जनवादिता का भी गुण समेटे हुए हैं। इसमें दलित जनों की तथा सामान्य जनों की समस्याओं को भी शब्द दिया गया। वे दलित, जो कविता से भी बाहर थे, कविता में स्थान पाने लगे और इस तरह काव्य को नया नायक मिला जो दलित था। मोचीराम, लुकमान अली, मुंशीलाल, रामलाल, अल्लारक्खी और दयाशंकर जैसे नायक कविता को मिले। स्वातंत्र्योत्तर कविता में अदम्य जिजीविषा है जो उसे व्यवस्था से लड़ने को प्रेरित करती है। वर्तमान परिस्थितियों में जब मानक की स्वतंत्रता को महत्व दिया जाने लगा तो कविता की स्वतंत्र–चेतना भी मुखर होने लगी। अतएव कविता के शिल्प पक्ष में भी अद्भुत बदलाव आया। स्वातंत्र्योत्तर कविता की भाषा को आक्रोशजन्य, आक्रामक तथा विद्रोही तेवर की कविता कहा गया है। इसका कारण तत्कालीन

परिस्थितियां ही हैं। भाषा और शिल्प पक्ष में नवीन प्रयोग किए गए क्योंकि आज के वैज्ञानिक युग में विश्वसनीयता तथा प्रभावोत्पादकता के भी प्रश्न उठे।

अतः यह कविता नित नए प्रयोग करती रही है। स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में नई कविता के बाद ही युवा पीढ़ी अपना नया सृजनात्मक मुहावरा लेकर आयी। इसकी पृष्ठभूमि के रूप में सन् 60 और उसके बाद के समय की हिंदुस्तान की सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्थाएं थी और साथ ही चीन और पाकिस्तान से सामरिक परिस्थितियां थीं। नेहरू युग का अवसान हो रहा था। स्वतंत्रता के बाद बड़ी उम्मीदें लगाई गई थी कि सपनों का देश होगा, एक स्वस्थ और वैज्ञानिक सोच वाला भारत होगा। पर ऐसा न हो सका। अतः युवा पीढ़ी की व्यग्रता स्वभाविक थी। यह पीढ़ी विघटित होते परिवेश के प्रति क्षोभ, आक्रोश से भरी थी। देश–विदेश की परिस्थितियों से प्रेरित होकर यह फूट पड़ी।

स्वातंत्र्योत्तर कविता विरासत में मिली टूटन, अकेलेपन, अहंवाद, राजनीतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक परिवेशों के खोखलेपन, विसंगतियां और विद्रूपताओं को झेलती हुई, षड्यंत्री कुहासों को छांटती हुई, तज्जनित क्षोभ और संत्रास से भरपूर, पीड़ित संवेदनाओं की अकुलाहट आत्मसात् करती हुई, बेकारी, महंगाई, अमानवीयता, और सांस्कृतिक विघटनों के मध्य अपने अस्तित्व की पहचान के लिए प्रयत्नशील है।

सन् 1960 के बाद के कवि ने आधुनिक चेतना द्वारा कल्पित अमूर्त मानव का मिथक तोड़ दिया था। ऐसे में भाषा भी प्रभावित हुई थी। स्वातंत्र्योत्तर कविता की भाषा शक्ति संपन्न है और यह शक्ति ही युग–बोध कराने का काम किया करती है। यह भारतीय अस्मिता की खोज करने वाली कविता है। कविता इतिहास से बाहर नहीं है और ना संदर्भों से जुड़ा आदमी ही उसके बाहर है। इतिहास से जूझता, पछाड़ खाता इतिहास और सामाजिक स्थितियों के सामंजस्य की कोशिश में लगा हुआ मानव है। यही चेतना स्वातंत्र्योत्तर कविता का केंद्रीय तत्व है। साठोत्तरी कविता के लिए विद्रोह, क्रांति, विसंगति और विघटन जीवित संस्कार बन गये।

साठोत्तरी कविता के लिए राजनीति एक जीवंत सत्य है। यह विद्रोही स्वभाव की कविता है। साठोत्तरी कवि युगीन विडंबनाओं, विसंगतियों और मूल्यहीनता की स्थिति को जांचते–परखते अनुभव करते हैं। ये मूल्यहीनता मिथकों के सहारे अभिव्यंजना देकर नया भाव खोजने का संकेत देते हैं। साठोत्तरी कविता ने अपने इतिहास और परिवेश से विद्रोह किया। इस विडम्बना का जितना गहरा एहसास साठोत्तरी कविता को है– इससे पूर्व किसी युग की कविता को नहीं। इस कविता की एक प्रमुख विशेषता जीवन और दिलेरी है। पाश्चात्य अधुनातन खोजो और विचारधाराओं ने हिंदी कविता को जबरदस्त रूप से प्रभावित किया। फ्रायड, एडलर, युंग आदि के विचारों और सिद्धांतों ने एक नए विचार–भूमि ,नयी दिशा समाज को प्रदान की। तमाम नव आंदोलनों ने बौद्धिकतावादी चेतना को बढ़ाया। सातवें दशक की काव्य–चेतना तत्कालीन विसंगतियों से जुड़ी हुई है। 23 वर्षों में जनता की माली हालत में कोई परिवर्तन नहीं आया। अतः आशा और उल्लास की सारी स्थितियां समाप्त हो गयी और कुंठा,अनास्था और उद्वेग से भरी मानसिकता रोशनी में आयी। दूसरी तरफ कुछ ना कर पाने की छटपटाहट और मायूसी थी।

युवा कवियों ने भारतीय लोकतंत्र के पहलुओं और कमजोरी को सामने खड़ा कर दिया। आक्रोश ही युगीन कविता की सृजन–शक्ति है। युवा कवि जानता है कि राजनीतिज्ञों ने शब्दावलियों के हेर–फेल कर सब्ज–बाग दिखाकर जनता को बहलाया है और जनता मूर्ख बन कर भी फिर उसी पर आशा लगाती रही है। इन कवियों ने व्यवस्था का विरोध किया है। तत्कालीन भ्रष्ट राजनीति और इसमें प्रयुक्त गरिमामय शब्द लोकतंत्र, देशभक्ति, मतदान और समाजवाद का ऐसा पतन हुआ है कि इनका मूल अर्थ खो गया है। भ्रष्टाचार और स्वार्थपरता ने व्यवस्था को गिरा दिया अतः इन पर व्यंग्य की धारा गिरी। बेलाग कथन इस कविता की प्रमुख विशेषता रही है। स्वातंत्र्योत्तर कविता ने बिम्ब और प्रतीक को स्वीकार नहीं किया। बात को सीधे–सीधे और बड़ी निर्भीकता के साथ कहा। आठवां दशक प्रगति, खोज, उपलब्धि का रहा है। विज्ञान में निरंतर खोज, साहित्यिक विकास महत्वपूर्ण है। संविधान में लगातार संशोधन होते रहे। लोकतंत्र जनता का स्वयं कल्याण के लिए

स्वयं पर शासन है। परंतु संविधान के नाम पर लोकतंत्र की कसमें खाकर भी अनुशासनहीनता, बंद घेराव, हड़ताल, चोरबाजारी फैल रही है। कविता में संसद पर काफी विचार हुआ है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ही संसद के दोनों सदनों में शोर ही हुआ है और बात विवाद मात्र बनकर रह गई है। समाजवाद स्वर्णिम स्वप्न मात्र ही है। स्वच्छ शासन देश की उन्नति के लिए आवश्यक था। परंतु कुर्सी आवश्यक हो गयी। भारत एक गणराज्य घोषित किया गया, एक आदर्श लोकतांत्रिक और समाजवादी राष्ट्र के रूप में उसे प्रस्तुत किया गया। परंतु विश्वबंधुत्व के आदर्श को रखने वाले देश में लूट–खसोट, चोरी, हत्या, बलवा खूब हुए। इसी दशक में पाकिस्तान के दोनों हिस्सों में युद्ध हुआ। इस युद्ध में मानवीयता की सीमाओं का खूब उल्लंघन किया गया। पूर्वी पाकिस्तान का पक्ष लेकर इस युद्ध में भारत भी लड़ा था। भारत के प्रयासों से ही पूर्वी पाकिस्तान अलग होकर बांग्लादेश नामक स्वतंत्र राष्ट्र बना। इसके पूर्व की स्थितियों का आकलन करते हुए कवियों ने याहिया खां और पश्चिमी पाकिस्तान पर व्यंग्य किया और इस युद्ध को अभिनव महाभारत कहा। इस मुक्ति के श्रेय की हिस्सेदार इंदिरा गांधी भी हुई। इस प्रकार यह समूचा दशक पारिवारिक, राजनीतिक, धार्मिक समस्याओं से जूझता, निपटता या उन्हें बीच में ही छोड़ता आगे बढ़ गया। परमाणु बम परीक्षण और आपातकाल के लिए यह एक अविस्मरणीय दशक रहा है। आगे के दशकों की कविता में हमारी बुलाई जा रही संस्कृति पर विशेष चिंता जताई गई। आधुनिकतम, सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से हमारी संस्कृति पर किए जा रहे प्रहार शोचनीय हैं। जीवन आस्था, विशिष्ट होती मानवीयता, सामाजिक यथार्थ, जमीन की गंध, सामाजिक बुराइयों जैसे– दहेज पर भी स्वातंत्र्योत्तर कविता में विचार किया गया।

स्वातंत्र्योत्तर कविता की आलोचना के संदर्भ में आलोचकों ने इस के संदर्भ में जो अवधारणाएं प्रस्तुत की है उन्हें तीन भागों में बांटा जा सकता है। एक है कालवाची अवधारणा, दूसरी है प्रवृत्तिपरक अवधारणा और तीसरी है वामपरक या जनवादी अवधारणा। कालवाची अवधारणा को अस्वीकृत करने के पीछे तर्क है–प्रत्येक साठोत्तरी कवि या कविता को केवल इसीलिए हम स्वातंत्र्योत्तर नहीं मान

सकते कि इस कवि या कविता का काल सन् साठ के बाद है बल्कि उसकी (कविता की) विशेषताओं को भी ध्यान में रखना अनिवार्य हो जाता है। वास्तव में प्रगतिशील रुझानों के साथ यथार्थपरकता और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से सम्बद्ध कवि या रचनाएं ही स्वातंत्र्योत्तर की परिधि में आ सकती हैं। दूसरी अवधारणा है–प्रवृत्तिपरक अवधारणा। प्रवृत्तियों के आधार पर ही कविता को किसी युग विशेष में स्थान मिल सकता है। परंतु निश्चित काल सीमा के भीतर एक निश्चित भाव–भूमि पर रचित कविता को ही स्वातंत्र्योत्तर कविता माना जा सकता है। प्रवृत्तियों के आधार पर स्वातंत्र्योत्तर की सीमा को सन् 40 या उससे पूर्व ले जाना उचित नहीं है। जनवादी या साम्यवादी कविताएं स्वातंत्र्योत्तर कविता की एक विशेषता मात्र है। स्वातंत्र्योत्तर केवल ही पर्याप्त नहीं। अतः स्वातंत्र्योत्तर कविता का अर्थ जनवादी कविता लेना अनुचित है। लेखक ने इसी संदर्भ में पहले स्वातंत्र्योत्तर कविता की अवधारणाओं की समीक्षा पुनश्च काल निर्धारण एवं प्रवृत्तियों की आलोचना के दायरे में प्रस्तुत किया है। जैसे–जैसे समय बीतता गया भाषा भी अपने स्वभाव में एक खास बदलाव लाती गई। साठोत्तरी कविता की भाषा आक्रोश से भरी, विद्रोही तेवर की थी पर आठवें दशक के बाद लोकात्मिक शक्ति, स्वभाविकता, सहजता एवं ठंडेपन से भरती गयी। आगे आने वाली दशकों की कविता में व्यंग्य तो था पर आग ही आग हल्की हो गयी। उदाहरण के लिए धूमिल की 'मोचीराम' कविता की कुछ पंक्तियां द्रष्टव्य हैं– "क्योंकि असल अपराधी का नाम लेने के लिए कविता, सिर्फ उतनी ही देर सुरक्षित है जितनी देर कीमा होने से पहले, कसाई के टीहे और तनी हुई गंडास के बीच बोटी सुरक्षित है।"

मेरी समझ में देश को आजादी मिलने और हिन्दी कविता में एक नए युग का सूत्रपात होने के पीछे जो परिस्थितियाँ व कारण रहे है। उनमें भी कई स्थानों पर समानता देखी जा रही है। सारे विश्व में और देश में विचारों की जो नई बयार बह रही थी, उससे तार सप्तक के कवि भलिभांति परिचित थे। वे तेजी से बदलते हुए घटनाचक्र पर सर्तकता से दृष्टि जमाये हुए थे। यह कहा जा सकता है कि कवि समय के साथ चल रहा था कवि अपने दौर के राजनीतिक हलचलों से स्वयं

को काटकर अलग नहीं रख सकता, उसका प्रभाव किसी न किसी रूप में पड़ा ही है।

प्रस्तुत शोध–प्रबंध भूमिका के अतिरिक्त पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है, जो निम्नवत हैं –

प्रथम अध्याय **'स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता का स्वरुप'** है। प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत स्वातंर्त्योत्तर हिन्दी कविता की वैचारिक पृष्ठभूमि, उसके मूल्य, उसकी सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक एवं साहित्यिक पृष्ठभूमि पर विचार किया गया है, तथा उस समय काल के कवियों की कविताओं में उनकी क्या पहचान रही है तथा स्वतंत्रता के बाद अर्थात देश आजाद होने के बाद जो देश का कलेवर बदल रहा था देश में तमाम तरीके के बदलाव हो रहें थे, उन सारे बदलाओं को दिखाने की कोशिश किया गया है।

द्वितीय अध्याय **'कविता और समाज एवं राजनीति'** इस अध्याय के अंतर्गत कविता की वैचारिक पृष्ठभूमि, मार्क्सवादी जीवन–दृष्टि, सांस्कृतिक राष्ट्रीयता क्या है तथा कविता का स्वरूप कैसा होता है और समाज पर उसके पड़ने वाले प्रभावों पर प्रकाश डाला गया है।

तृतीय अध्याय **' स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में सामाजिक अभिव्यक्ति'** है। इस अध्याय के अंतर्गत सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक परिस्थितियों के बदलते परिदृश्य के साथ जिस तरह से देश और समाज में बदलाव हो रहें थे और आजादी के बाद जिस तरह से जीवन मूल्यों नए–नए जो जटिल समस्याएं हमारे सामने दिखाई पड़ रही थी उन सबका विश्लेषण इसमें किया गया है ।

चतुर्थ अध्याय **' स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में राजनीतिक अभिव्यक्ति'** है। इसके अंतर्गत यह दिखाया है कि राजनीतिक क्षेत्र में जिस तरीके से उठापटक देश में मचा हुआ था जैसे कांग्रेस वामपंथी दलों में और जनसंघ का विशेष उभार हो रहा तथा कुछ और विशेष क्षेत्रीय पार्टियों का उभार तेजी से होता जा रहा था

उनके समक्ष जो कविता रची जा रही थी उन सब बदलाओं को रेखांकित करते हुए जो कविता कह रही है उन बदलाओं को मैंने इस अध्याय में जिक्र किया है।

पंचम अध्याय **'स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में सामाजिक और राजनीतिक अभिव्यक्ति : एक आलोचनात्मक अध्ययन'** इस अध्याय के अंतर्गत सामाजिक और राजनीतिक विभिन्य बिन्दुओं के जो ताने बाने को लेकर आलोचना करते हुए स्वातंर्त्योत्तर युग की कविता की भाषा और शिल्प पक्ष पर भी चर्चा किया गया है।

इस शोध–प्रबंध के कुछ मुख्य बिन्दु निम्नवत हैं–

- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में जीवन के यथार्थ विश्लेषण को आधुनिक महत्व दिया गया साहित्य और समाज एक दूसरे से जुड़े है एक के बिना दूसरे की कल्पना नहीं की जा सकती है।

- नामवर सिंह ने रचना में जीवन यथार्थ के चित्रों को आगमन सर्जन व्यक्तित्व के माध्यम से ही माना है।

- स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में प्रवृत्ति और अनुभव के आधार पर अपने परिवेश, सुख–दुख, आशा–निराशा, संत्रास–जिजीविषा को स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता ने बखूबी से चित्रित किया है।

- पारिवारिक संत्रास को भी स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता ने अभिव्यक्ति दी है।

- अपर्णा सारस्वत के शब्दों में कहें तो ''कविता में आम आदमी की जिंदगी को प्राथमिकता मिली उसकी समस्याओं पर खुलकर विचार हुआ एक गहरी सामाजिक चेतना इस वर्ग में परिलक्षित हुई।

- आधुनिक काल में कविता के विकास परंपरा में भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता के बाद स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता (1950 से अद्यतन) का स्वरूप विकसित हुआ।

- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता यानी मोटे तौर पर आजादी के बाद लिखी जाने वाली भाव भूमि पर कविता को प्रायः स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता कहते हैं।

- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता के बाद विविध आन्दोलन जैसे– अकविता आन्दोलन, जनवादी कविता आन्दोलन, सहज कविता, प्रतिबद्ध कविता, विचार कविता, वीट कविता, वाम कविता, सनातनी सूर्योदयी कविता, लंबी कविता, युयुत्सावादी कविता का भी विकास हुआ।

- आजादी से मोहभंग के बाद की कविता में आक्रोश, निराशा, विरोध क्रान्ति और सत्ता के प्रति यथार्थ बोध तीव्र रूप में सृजन हुआ।

- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में सामाजिक और राजनीतिक दोनो चेतना केन्द्र में है।

- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता अपने युग और परिवेश से जुड़ी हुई है।

- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में अपने समय का बहु रंगीय चित्र है जिसमें लाठी चार्ज भी है। पुलिस, चूल्हा, पतीली है तो चिड़ियाँ और पत्तियाँ भी है।

- सामाजिक विकृतियाँ खोखले सिद्धांत आदि सबको स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में समेटा गया है।

- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता की भाषा सपाट बयानी के साथ–साथ सहज भाषा जो आसानी से समझा जा सके का प्रयोग अधिक से अधिक मात्रा में कवियों ने स्वीकार किया है।

- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में लाक्षणिकता का समावेश है।

- जैसे– धूल के परत में, हंसी क्या रख दी

- सारे ब्रह्मांड को परेशान कर दिया।

- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में कवियों ने लगभग सभी दृश्य, ध्वनि बिंब, वस्तु बिंब, आदि का प्रयोग किया है।

- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में अपने समय में विद्यमान सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक आर्थिक स्थिति का जो यथार्थ रूप है। उसका प्रकटन भी है, तो साथ ही अंधेरा कैसे दूर हो इसका समाधान भी है।

- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में प्रेम का उद्‍दात्त रूप स्निग्धता और कोमलता भी मिलती है।

- सामाजिक जागरूकता के पर्याय के रूप में सामाजिक चेतना को हम देख सकते है अर्थात् जब समाज में एक विशेष आदेश के प्रभाव से एक नवजागरण पैदा होता है तो उसे हम सामाजिक चेतना कहते है।

- सामाजिक चेतना का विकास चेतन (चिंतन) मानस की उस शक्ति के कारण होती है। जो आंतरिक और वाह्‌य तत्वों, वस्तुओं, विषयों और व्यवहार का ज्ञान और अनुभव कराती है।

- स्वांतत्र्योत्तर हिन्दी कविता में सामाजिक चेतना का विकास तीव्रता से मुखर हुआ।

- स्वांतत्र्योत्तर हिंदी कविता में सामाजिक चेतना धूमिल, मुक्तिबोध, शमशेर बहादुर सिंह, नागार्जुन, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, रघुवीर सहाय, अज्ञेय, भवानी प्रसाद मिश्र, मंगलेश डबराल, अरूण कमल, अशोक वाजपेयी आदि कवियो की चेतना मुखर हुई।

- 1950–60 का समय सामाजिक दृष्टि से बड़ी ही विकट समस्याओं का दौर था। देश की जनता में आजादी के सपनों का अंकुर फुटने लगा। लेकिन तमाम पंचवर्षीय योजनाओं, युद्धों की विभीषिका आदि के कारण जनता,

परिवार में, गहरी निराशा पनपने लगी, उसी की अभिव्यक्ति स्वांतत्र्योत्तर हिन्दी कविता में हुई है।

- इस दौर के कवियों ने सामाजिक एकता, समरूपता और निजता के लिए शोषक के विरूद्ध विद्रोह करने के रास्ते का चुनाव का संकेत देता है।

- स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में निहित रात और दिन अभाव और विकट समस्याओं के बीच जी रहें जनता के प्रति कवियों में सहानुभूति और आत्मसम्मान की जगह बनी और उसके विरोध में शोषकों के प्रति विद्रोह ने जन्म लिया।

- स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में निहित राजनीति समाज सापेक्ष बनाम व्यक्तिगत प्रधान राजनीति है।

- स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में दो प्रकार के राजनीतिक कवि हुये। पहला वह राजनीतिक कवि जो समाज में परिवर्तन के लिए सरकार की उपस्थिति को अनिवार्य मानता है। जिनमें आलोक धन्वा, अशोक बाजपेयी, अरूण कमल, आदि है। दूसरा वह कवि जो समाज में परिवर्तन लाने के लिए सरकार के अनुपस्थिति को नकारता है जैसे धूमिल, मुक्तिबोध, रघुवीर सहाय, नागार्जुन, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना आदि।

- स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में कवियों और आज जनता में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद की राजनीति के प्रति तीव्र मोहभंग दिखायी देता है।

- स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में निहित मोहभंग के पीछे अनेक कारण हुये जिनमें 1962 में चीन का युद्ध, 1967 में नक्शलवाड़ी आंदोलन और कांग्रेस का 12 राज्यों में हार, 1965 में भारत पाकिस्तान युद्ध, 1971 में पुनः युद्ध आदि राजनीतिक विसंगतियों से देश व देश की जनता त्रस्त थी।

- प्रगतिशील शब्द से आशय है बराबर आगे बढ़ने वाला, सुधारवादी, जो प्रगतिवाद का अनुयायी हो और प्रगतिवाद के सिद्धान्त पर आधारित है।

- धार्मिक रूढ़ि मान्यताओं और संकीर्ण विचार धारा के विषयों पर वैज्ञानिक दृष्टि से सोचना प्रगतिशील चेतना कहलाता है।

- साहित्य में प्रगतिशील चेतना से आशय है शोषक वर्ग के खिलाफ विरोध , मुक्त समाज की स्थापना, पूँजीवाद, सामंतवाद, मजदूरवर्ग, किसान, मध्यवर्गीय, श्रमिक आदि के प्रति सहानुभूति आदि का कवियों द्वारा चि़त्रण और समाधान।

- प्रगतिशील कविता वस्तु और शिल्प दोनों से बहुमुखी और वैविध्यपूर्ण थी।

- प्रगतिशील कवि यह मानता है कि राजनीतिक कार्यवाही के माध्यम से मानव समाज में सुधार संभव है। एक राजनीतिक आन्दोलन के रूप मे और सामाजिक संगठन में कथित प्रगति के आधार पर सामाजिक सुधार द्वारा मानव स्थिति को आगे बढ़ाना चाहता है।

- प्रगतिशील विचारधारा के प्रतिनिधि रचनाकारों मे नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, त्रिलोचन प्रमुख है। इन तीनों कवियों को 'वृह़त्रयी' कहा जाता है और अन्य रचनाकारो में धूमिल, मुक्तिबोध, शमशेर बहादुर सिंह, रामधारी सिंह दिनकर, शिवमंगल सिंह सुमन आदि का नाम शामिल है।

- रेवतीरमण के शब्दों में प्रगतिशील साहित्य का लक्ष्य संस्कृत का निर्माण और उत्थान है। इस दौर के कवियों ने इसी भाव से साहित्य का सृजन किया।

- प्रगतिशील चेतना में कवि समाज को शोषक और शोषित के रूप में देखता है। वह शोषक वर्ग के खिलाफ शोषित वर्ग में चेतना लाने तथा उसे संगठित कर शोषण मुक्त समाज की स्थापना करने की कोशिश का समर्थन करता है।

- मार्क्सवादी विचारधारा की वैचारिकी सामाजिक संरचना की वह आर्थिक व्याख्या है कि जिसके द्वारा समाज में हो रहें भेद भाव को समझना है।

- मार्क्सवाद क्रान्तिकारी समाजवादी का ही स्वरूप है जो पूर्ण रूप से आर्थिक एवं सामाजिक समानता में दृढ़ विश्वास रखता है।

- मानव के हर क्रिया–कलाप में संस्कृति झलकती हैं। जिसके निर्माण का केन्द्र बिन्दु मानवीयता है। जो जीवन क्रिया–कलाप संवेदनात्मक गहराईयों के साथ जीने में विश्वास रखता है।

- मैथ्यू अर्नाल्ड ने लिखा है विश्व के सर्वोत्कृष्ट कथनों और विचारों का ज्ञान भण्डार ही सांस्कृतिक चेतना है।

- युगों–युगों से चली आ रही परिस्थितियों में जीवन दर्शन व्यक्तिगत और सामुदायिक विशेषताओं, भूगोल, ज्ञान–विज्ञान के विकास क्रम आदि को संस्कृति कहते हैं और इसी का सूक्ष्मतम आचार–विचार की प्रणाली सांस्कृतिक चेतना कहलाती हैं ।

- स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में जीवन की खीझं, असंतोष, निराशा, कुंठा और तीव्र स्वर है।

- स्वातंत्र्योत्तर कविता समाज की मान्यताओ एवं परम्पराओं से मोहभंग प्रकट करती है।

- स्वातंत्र्योत्तर कविता जीवन के अनुभूतियों को स्वर देती है। जो जीवन की वास्ताविकताओं से मन में उभरती है।

साहित्यकार अपने युग परिवेश से प्रभावित होता है। तथा समकालीन परिस्थितियाँ उस परिवेश को प्रभावित करती है। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में तात्कालीन घटनाओं व विचारों के आंतरिक एवं बाह्य दबाओं के प्रभावश कुछ विशिष्ट प्रवृत्तियाँ भी स्वाभाविक रूप से उभकर सामने आयी है। जिससे साहित्य और साया समाज इन कविताओं में समकालीन परिवेश अपनी वास्तविकता के साथ प्रतिबिंबित हुई है। आज के भूमण्डलीकरण के कारण मनुष्य की बदलती जरूरतें, भूलते मानवीय मूल्य, समाज में व्याप्त विसंगतियो को भी चित्रित किया गया है। वर्तमान राजनीतिक सामाजिक और राजनीतिक सत्ता में फैले भ्रष्टाचार एवं दायित्व हीनता जैसी अनेक वृत्तियों को अपनी कविताओं का कथ्य बनाया है।

- स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता की अन्तर्निहित चेतना और उसके सरोकारों पर प्रकाश डाला गया है।

- समकालीन परिदृश्य में हाशिये के वर्गो को रेखांकित कर केन्द्र में लाने का प्रयास किया गया है।

- समकालीन समाज के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक क्षेत्रों में हो रहे संघर्ष तथा परिवर्तन और विकास की प्रक्रिया को प्रकाश में लाना।

- स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में चित्रित सामाजिक जिन्दगी के यथार्थ को इंगित करने का प्रयास किया गया है।